B-A-sem-1

पुनरुक्ति (Tautology) - जब दो प्रकथन लिए जाएँ

(i) तेन सिंह हिमालय की चोटी पर चढ़े (ते)

(ii) तेन सिंह हिमालय के चोटी पर चढ़े या ना चढ़े (ते V~ते)

दोनों ही कथन सत्य हैं, पर पहले कथन की सत्यता अनुभव द्वारा स्थापित की जा सकती। वह असत्य भी हो सकता है पर दूसरे प्रकथन की सत्यता अनुभव से स्वतन्त्र रूप से सत्यापित किया जा सकता है। 'राम पटना में है' प्रकथन की सत्यता के द्वारा देखकर स्थापित की जा सकती है पर 'राम पटना में है या पटना में नहीं' प्रकथन बिना देखे सत्य होगा, क्योंकि दोनों विकल्पों में एक अवश्य सत्य होगी। उसी प्रकार या तो 'तेन सिंह हिमालय की चोटी पर चढ़े; (ते) सत्य होगा या यदि यह सत्य नहीं हो तो इसका निषेधात्मक प्रकथन 'तेन सिंह हिमालय की चोटी पर नहीं चढ़े (~ते) सत्य होगा। अतः ते V~ते' अवश्यक सत्य है। ते V~ते' एक आकारिक सत्य है जिसके सभी प्रतिस्थापित दृष्टांत सत्य हैं। वह प्रकथन-आकार, जिसके सभी प्रतिस्थापित दृष्टांत सत्य हो, पुनरुक्ति है (ते V~ते) का विशेष आकार 'P V ~P' है जिसे निम्नलिखित सत्यता सारणी से पुनरुक्ति सिद्ध किया जाता है-

BA-Sem-1

p	~p	pv~p
T	F	T
F	T	T

इस सत्यता सारणी में 'pv~p' स्तम्भ में केवल T (सत्य) है। इसमें यह स्पष्ट है कि 'pv~p' के सभी सम्भव दृष्टांत सत्य हैं। इसलिए कोई भी प्रकथन जो इस पुनरुक्ति का दृष्टांत है आकारिक दृष्टि से सत्य है और एक पुनरुक्ति है।

व्याघात (contradiction)

फिर, दो प्रकथन लें (i) मेहरा हिमालय पर चढ़ा (म) और (ii) 'मेहरा हिमालय पर चढ़ा तथा नहीं चढ़ा (म.~म)'। दोनों ही प्रकथन असत्य हैं। पहले प्रकथन की सत्यता अनुभव से सिद्ध होती है, पर दूसरे प्रकथन की असत्यता अनुभव से स्वतंत्र रीति से सिद्ध होती है। प्रकथन 'म.~म' आकारिक दृष्टि से असत्य है। इसके सभी दृष्टांत असत्य हैं। एक प्रकथन दूसरे प्रकथन का व्याघाती है यदि दोनों का साथ सत्य होना असंभव है। यह निम्नलिखित सत्यता सारणी से सिद्ध किया जा सकता है। 'म.~म' का विशेष आकार 'p.~p'